उदयप्रकाश की कहानियाँ: भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध का वृहत्तर आयाम

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
के अंतर्गत हिन्दी में पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध रूपरेखा

2016

निर्देशक
डॉ. रमेश अनुपम
सहायक प्राध्यापक
शा.दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी)
महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

शोध छात्रा
हीना शर्मा

शोध केन्द्र
शासकीय दूधाधारी बजरंग महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

1. शोध प्रबंध का शीर्षक : उदयप्रकाश की कहानियॉ : भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध का वृहत्तर आयाम

2. विश्वविद्यालय : पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

3. शोध केन्द्र : शासकीय दूधाधारी बजरंग महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

4. विषय : हिन्दी

5. निर्देशक : डॉ. रमेश अनुपम,
सहायक प्राध्यापक
शासकीय दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी)
महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

6. शोध छात्रा : हीना शर्मा

शीर्षक : उदयप्रकाश की कहानियॉ : भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध का वृहत्तर आयाम

परिचय :

भूमण्डलीकरण के अनेक समानार्थी शब्द है जैसे वैश्वीकरण, जगतीकरण और अंग्रेजी में ग्लोबलाइजेशन। इसे बांग्ला में विश्वायन कहते हैं। भूमण्डलीकरण जैसे शब्द अपने में बड़े–बड़े अर्थ को समेटे हुए है। भूमण्डलीकरण का मूल उद्देश्य है कि "पूरे विश्व में अपने व्यापार के लिए एक नये बाजार की तलाश करना।" भूमण्डलीकरण का एक अर्थ यह भी है कि दुनिया की राजनीति को अपने हिसाब से तथा बाजार की जरूरतों के हिसाब से संचालित करना। भूमण्डलीकरण को माध्यम बनाकर पूरे विश्व को एक ही सांचे में ढ़ालने की कोशिश भी वैश्वीकरण एक प्रमुख उद्देश्य हैं। अर्थात् भूमण्डलीकरण समृद्ध राष्ट्रों एक ऐसा मायाजाल है जिसे विकासशील राष्ट्रों को मानने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इसी तरह भूमण्डलीकरण का एक अर्थ यह भी है बताया जाता है कि प्रौद्योगिक साधनों जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट और संचार के साधनों द्वारा राष्ट्र, समुदाय की दूरी को कम करना।

बीसवीं शताब्दी का आठवॉ दशक विश्व में उथल–पुथल का समय था। यह विश्व में वैश्वीकरण के विकास का समय था जिसका प्रभाव भारत पर भी पड़ा। नवमें दशक तक आते–आते वैश्वीकरण का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व में दिखाई पड़ने लगा। भारत में भी नवमें दशक के बाद भूमंडलीकरण का प्रभाव एक नये रूप में दिखाई देता है।

भूमण्डलीकरण के नाम पर समृद्ध राष्ट्र अपने उत्पादों को विश्व बाजार में बेचने का प्रयास करते है। इसी तरह समृद्ध देश दुनिया के विकासशील राष्ट्रों में अपने लिए बाजार की तलाश करते है तथा वहॉ उपभोक्ता समाज को जन्म देते हैं। इसका प्रभाव सम्पूर्ण समाज में पड़ता है।

भूमण्डलीकरण के इस प्रभाव से हिन्दी साहित्य प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका है। साहित्य की हर विधा में इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। उदयप्रकाश के कहानियों में हमें भूमण्डलीकरण का व्यापक स्वरूप दिखाई देता है। उनकी कहानियों में भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध के स्वर को साफ–साफ देखा जा सकता है। उनकी कहानियों 'तिरिछ', 'और अंत में प्रार्थना', 'पाल गोमरा का स्कूटर', 'वारेन हेस्टिंग का सांड', 'पीली छतरी वाली लड़की', 'मोहनदास' जैसी प्रसिद्ध कहानियॉ वैश्वीकरण के प्रतिरोध की कहानियॉ है।

उदयप्रकाश की कहानियॉ समकालीन यथार्थ से न केवल पाठकों को रूबरू कराती हैं वरन् पात्रों, घटनाओं और क्षेपकों के माध्यम से भूमण्डलीकरण के वास्तविक सच को सामने भी लाती है।उदयप्रकाश एक ऐसे लेखक हैं जो भूमण्डलीकरण के वास्तविकता से भली–भांति परिचित है। इसलिए अपनी प्रारंभिक कहानियों में ही वे इस सच को उजागर करने से नहीं चूकते।

उदयप्रकाश अपनी कहानी 'तिरिछ' वैश्वीकरण के फलस्वरूप छीजती हुई मानवीय संवेदनहीनता को अपनी कहानी का विषय बनाते हैं। उदयप्रकाश की अधिकांश कहानियॉ भूमंडलीकरण के प्रतिरोध के स्वर को मुखरित करते प्रतीत होते है।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' तथा 'और अंत में प्रार्थना जैसी कहानियों में भूमण्डलीकरण के स्वर को उदयप्रकाश न केवल उजागर करते हैं वरन् उसके प्रतिरोध का वृहत्तर आयाम भी रचते हैं। 'पीली छतरी वाली लड़की' में उदयप्रकाश विश्वविद्यालय के कथानक के बहाने भूमंडलीकरण के सच को उजागर करते हैं। वहीं 'मोहनदास' में हमारे इस वैश्विक समय के सच को प्रस्तुत किया है। ये दोनों कहानियॉ भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध की मुखर कहानियॉ हैं। उदयप्रकाश के अधिकतर कहानियों में बाजारवादी–उपभोक्तावादी की आंधी में ढहते हुए विचारों और आदर्शों के प्रतिरूप की झलक साफ दिखाई देती है। उन्होंने उदारवादी अर्थव्यवस्था के अमानवीय चेहरे को अपने कहानी के माध्यम से बेनकाब करने की पूरी कोशिश की हैं। उदयप्रकाश की भाषा प्रवाह गजब का है। जो पाठकों को बांधे रखता है। उनकी भाषा में व्यंग्यार्थ नए ढंग से समाहित रहता है। इस प्रकार उदयप्रकाश की कहानियॉ समकालीन साहित्य में एक यथार्थ के आलोचनात्मक चित्रण कर एक नयी जमीन तैयार करती है।

उदय प्रकाश हमारे समय के सबसे सचेत एवं वैज्ञानिक समझ रखने वाले हिंदी के सर्वाधिक प्रतिभाशाली कथा लेखक है। यही कारण है कि उदयप्रकाश की कहानियॉ विश्व की अनेक भाषाओं में अनुदित हो चुकी है। इस तरह उदयप्रकाश विविध परिवर्तनों और नयी पद्धतियों के माध्यम से कहानी की रचना करते चले जाते है। उदयप्रकाश के लिए यथार्थ ही कला है और कला ही यथार्थ है। इस प्रकार उदयप्रकाश समकालीन यथार्थ को विभिन्न ताने–बाने के साथ पिरोते जाते है। मैं उदयप्रकाश की कहानियों में भूमंडलीकरण के प्रतिरोध के आयाम को प्रस्तुत करने का कार्य कर रही हूँ।

इस क्षेत्र में पूर्व में किए गए कार्य का संक्षिप्त विवरण

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में मेरी जानकारी के अनुसार अब तक कोई भी ऐसा कार्य प्रकाश में नहीं आया है, जो उदयप्रकाश की कहानियों में भूमण्डलीकरण और उसके प्रतिरोध के वृहत्तर आयाम जैसे विषय पर केन्द्रित हो। उदयप्रकाश की कहानियों में अंतर्निहित सामाजिक पक्ष पर केन्द्रित अधिकतर कार्य हुए है, लेकिन उनकी कहानियों में भूमण्डलीकरण जैसे विषय को केन्द्र में रखकर उनकी कहानियों का विश्लेषण मेरी जानकारी में अब तक नहीं हुआ है, उदयप्रकाश की कहानियों में भूमण्डलीकरण का प्रतिरोध मेरा प्रमुख कार्य है। मेरा यह शोध प्रबंध भूमंडलीकरण का भारत में आगमन तथा आठवें दशक पश्चात् भूमण्डलीकरण ने भारतीय समाज का शीर्षक 'उदयप्रकाश की कहानियॉ : भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध का वृहत्तर आयाम' के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में भूमण्डलीकरण जैसे गंभीर विषय पर अपने सीमित ज्ञान से कुछ नये आयामों पर दृष्टिपात करने का एक लघु उपक्रम है।

पूर्व कार्य के रूप में अन्य विश्वविद्यालयों में उदयप्रकाश की कहानियों में अलग–अलग कार्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है, जिससे प्रस्तावित शोध के संपादन में दिशा–निर्देश मिल सकता है–

1. 'उत्तर आधुनिकता और उदयप्रकाश का साहित्य' सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात) (2011)

2. 'उदयप्रकाश और उनका रचना संसार' श्रीमती ना. दा. ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, मुंबई (2013)

3. 'उदयप्रकाश और उनका रचनात्मक अवदान' महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, कोट्टयन (तमिलनाडू) (2014)

4. हिन्दी पत्रकारिता पर भूमण्डलीकरण का प्रभावः नवभारत टाईम्स दिल्ली के विशेष संदर्भ में (1991–2005) जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली (2014)

5. 'उदय प्रकाश की कहानी साहित्य, सौदर्य एवं शिल्प' शोलापुर विश्वविद्यालय, शोलापुर (महाराष्ट्र) (2015)

उद्देश्य

भूमंडलीकरण अपने छोटे से शब्द के साथ बड़े–बड़े अर्थों का समेटे हुए है इसलिए भूमंडलीकरण की व्यापकता को समझना आवश्यक है। भूमंडलीकरण के इस दौर में ये हमारे देश की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्थाएँ किस प्रकार अमानवीय एवं यांत्रिक होती जा रही हैं, इसे उदयप्रकाश की कहानियों के माध्यम से भली भांति समझा जा सकता है।

उदयप्रकाश जैसे सशक्त कथा लेखक अपनी कहानी में प्रयोगधर्मिता और समसामयिक अंतर्वस्तु को सर्वथा एक नये रूपाकार में प्रस्तुत करते हैं। उदयप्रकाश आज के यथार्थ को बखूबी समझते है और अपनी कहानी के माध्यम से आज के यथार्थ को विशेषकर नव्य–यथार्थ को बनाम भूमण्डलीकरण के सत्य को पाठकों के सामने लाने का प्रयास करते है, इसलिए वे अपनी कहानियों में प्रतिरोध का वृहत्तर आयाम रचना नहीं भूलते हैं।

उदयप्रकाश आज के यथार्थ को गहरी समझ रखने वाले हमारे समय के बेहद सजग लेखक हैं, इसलिए अपनी अधिकांश कहानियों में जैसे 'तिरिछ' 'और अंत में प्रार्थना' 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'वारेन हेस्टिंग का सांड', 'पीली छतरी वाली लड़की' और 'मोहनदास' में यथास्थान भूमंडलीकरण का व्यापक प्रतिरोध करते हुए दिखाई देते है।

इस प्रकार उदयप्रकाश जैसे सशक्त रचनाकार की कहानियों के माध्यम से भूमंडलीकरण के नये स्वरूप से परिचित होते है। उदयप्रकाश की कहानियों में वर्णित भूमंडलीकरण के प्रतिरोध के स्वर की रेखांकित करना ही मेरे इस शोधकार्य का महती उद्देश्य है।

महत्व

उदयप्रकाश आठवे दशक पश्चात् के समर्थ कथा लेखक है, उदयप्रकाश की अधिकांश कहानियॉ हिन्दी कथा साहित्य की धरोहर है। उदयप्रकाश की अनेक कहानियॉ विदेशी भाषा में अनुदित हो चुकी है। जर्मनी के विख्यात आलोचक, चिंतक तथा हिन्दी साहित्य में विगत अनेक वर्षों से गंभीर रूचि लेखक लोठार लुत्से उदयप्रकाश को समकालीन हिन्दी कथा साहित्य का सर्वाधिक महत्वपूर्ण लेखक मानते है।

उदयप्रकाश जैसे हिन्दी के अत्यंत महत्वपूर्ण लेखक जिन्होंने भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हमारे समकालीन यथार्थ को देखने, समझने तथा उसे अपनी कथा में पिरोने का असाध्य कार्य किया है, उसे रेखांकित करना मेरे इस शोध का प्रमुख उद्देश्य होगा। इस शोध के माध्यम से मेरा प्रयास होगा कि मैं उदयप्रकाश की उन कहानियों में जिसमें भूमण्डलीकरण को लेकर चिंताऍ प्रकट की गई हैं, उनका विश्लेषण प्रस्तुत करना तथा भूमण्डलीकरण के इस दौर को समझना मेरा प्रमुख उद्देश्य होगा।

मुझे विश्वास है कि मेरा शोधकार्य ‘उदयप्रकाश की कहानियॉ :भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध का वृहत्तर आयाम’ हिन्दी साहित्य में भूमण्डलीकरण विषय पर शोध करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध विषय में पुस्ताकालयों, विभिन्न ग्रंथों, संदर्भ ग्रंथों एवं पत्र–पत्रिकाओं आदि की सहायता लेते हुए वस्तुतथ्यात्मक अनुसंधान तथा प्रवृत्ति मूलक अनुसंधान प्रणाली द्वारा शोध कार्य के उद्देश्य को पूरा किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त प्रश्नावली एवं साक्षात्कार प्रविधि द्वारा महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन किया जाएगा। इंटरनेट, ब्लॉग, ईमेल इत्यादि माध्यमों को शोध प्रविधि में शामिल कर आवश्यकतानुसार संबंधित सामग्री ग्रहण किए जा सकते है।

शोध–सीमाएँ

शोधकार्य के दौरान शोध को अति–व्यापक अथवा संकुचित होने से बचाने के लिए, शोध की दिशा में भटकाव न हो इसके लिए शोध की सीमाएँ निर्धारित की जाती है। इस आधार पर मेरे द्वारा मेरे विषय में निर्धारित की हुई शोध की सीमाएँ इस प्रकार है :–

1. शोधकार्य के सीमित समय को ध्यान में रखते हुए मैंने उदयप्रकाश की उन छः कहानियों को अपने शोध हेतु सम्मिलित किया है जिसमें भूमंडलीकरण का व्यापक प्रतिरोध दृष्टिगोचर होता है।

2. अपने शोध विषय के अंतर्गत मैंने हिन्दी कहानी उद्भव एवं विकास भूमंडलीकरण का उद्भव एवं विकास, भूमंडलीकरण के प्रतिरोध को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

3. उदयप्रकाश बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक है। उदयप्रकाश हिंदी के महत्वपूर्ण पत्रकार, कवि एवं फिल्मकार भी हैं। इस प्रकार समकालीन हिंदी साहित्य में उदयप्रकाश का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैंने अपने शोध के माध्यम से उदयप्रकाश के इस पक्ष को सामने लाने का प्रयास किया है।

शोध प्रबंध की अध्यायों में विभक्त करने वाली प्रस्तावित रूपरेखा संलग्न है।

‘उदयप्रकाश की कहानियॉं: भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध के वृहत्तर आयाम’

प्रस्तावना– 1. विषय की व्याख्या,
2. विषय की व्याप्ति, सीमाएँ एवं पूर्वानुसंधान
3. प्रबंध का कार्यक्षेत्र
4. महत्व

प्रथम अध्याय – उदयप्रकाश : व्यक्तित्व एवं सृजनशीलता

1.1 जीवन परिचय
1.2 रचना संसार

द्वितीय अध्याय – समकालीन हिन्दी कहानी के परिप्रेक्ष्य

2.1 स्वातंत्रोत्तर हिंदी कहानी
2.2 समानांतर हिंदी कहानी
2.3 जनवादी – प्रगतिशील हिंदी कहानी
2.4 इक्कीसवीं सदी में हिंदी कहानी

तृतीय अध्याय – भूमण्डलीकरण : उद्‌भव एवं विकास

3.1 भूमण्डलीकरण – अवधारणा और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
3.2 नव्यपूंजीवादः टेक्नालॉजी, पूंजी और बाजार
3.3 भूमण्डलीकरण और आधुनिक विकास : द्विध्रुवीय विश्व
3.4 भूमण्डलीकरण और भारत

चतुर्थ अध्याय – उदयप्रकाश की कहानियों में भूमण्डलीकरण का प्रभाव

4.1 तिरिछ
4.2 पॉल गोमरा का स्कूटर
4.3 वारेंन हेस्टिंग का सांड
4.4 और अंत में प्रार्थना
4.5 पीली छतरी वाली लड़की
4.6 मोहनदास
4.7 अन्य कहानियॉ

पंचम अध्याय– उदयप्रकाश की कहानियों में भूमण्डलीकरण का प्रतिरोध

5.1 भूमण्डलीकरण बनाम पूंजीवाद का प्रतिरोध
5.2 भूमण्डलीकरण बनाम अपसंस्कृति का प्रतिरोध
5.4 भूमण्डलीकरण के प्रतिरोध के वृहत्तर आयाम

उपसंहार

परिशिष्ट–
1. आधार ग्रंथ
2. संदर्भ ग्रंथ
3. सहायक ग्रंथ
4. पत्र–पत्रिकाएं
5. साक्षात्कार

प्रस्तावित कार्य का संभावित परिणाम

उदयप्रकाश अपनी कहानियों के माध्यम से भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण जैसे जटिल समस्या से अवगत कराने का कार्य किया है। भूमण्डलीकरण जैसे छोटे से शब्द हमारे समाज, संस्कृति और सभ्यता को प्रभावित करते हुए एक दानव की तरह सब कुछ निगलता चाहता है। भूमण्डलीकरण का प्रभाव इतनी तेजी से फैला कि अमीर राष्ट्रों द्वार निर्धन राष्ट्रों को तेजी से लुटा जा रहा है। इस प्रकार इस तरह मंशा रखने वाले भूमंडलीकरण को हम उदयप्रकाश जैसे साहित्यकार के कहानियों के माध्यम से जान सके है।

आधार ग्रंथ

- उदयप्रकाश, तिरिछ, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990
- उदयप्रकाश, और अंत में प्रार्थना, वाणीप्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1996
- उदयप्रकाश, पॉल गोमरा का स्कूटर, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997
- उदयप्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001
- उदयप्रकाश, मोहनदास, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006

संदर्भ ग्रंथ

- काबरा कमल नयन, भूमण्डलीकरण (विचार, नीतियॉ और विकल्प), राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2010
- कौशिक शिवशरण, दसवें दशक के हिन्दी उपन्यास और भूमण्डलीकरण, अध्ययन पब्लियर्श एण्ड डिस्ट्रब्यूटर्स, प्रथम संस्करण 2012
- खरे नीरज, बीसवीं सदी के अंत में हिंदी कहानी, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004
- गौतम लक्ष्मी, उत्तर आधुनिकता और समकालीन कथा साहित्य, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रथम संस्करण 2013
- जिज्ञासु मोहनलाल, कहानी और कहानीकार, राष्ट्रभाषा प्रिंटर्स, दिल्ली प्रथम संस्करण 1963
- दुबे अभयकुमार, भारत और भूमण्डलीकरण, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2003
- देसाई पारूकांत, साठोत्तरी उपन्यास, चिंतन प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण 2002
- नगेन्द्र, हरदयाल, हिन्दी साहित्य का इतिहास मयूर पेपरबैक्स, नोएडा प्रथम संस्करण 1973
- यादव राजेन्द्र, एक दुनिया सामांतर, दिल्ली प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1985
- लाल लक्ष्मीनारायण, आधुनिक हिन्दी कहानी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1989
- सिंह विजयमोहन, बींसवी सदी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2010

- सिंहल निर्मल, नई कहानी और अमरकांत, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1969

पत्र–पत्रिकाएँ

आलोचना 53 अंक 2015

उद्भावना फरवरी 2015

पल–प्रतिपल 2005

मीडिया विमर्श दिसंबर 2012

वागर्थ मई 2015

हंस दिसंबर 2001

निर्देशक

डॉ. रमेश अनुपम
सहायक प्राध्यापक
शा.दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी)
महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोध छात्रा

हीना शर्मा

अग्रेषित

प्राचार्य
शोध केन्द्र
शा.दू.ब. महिला स्नातकोत्तर (स्वशासी)
महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)